Comparative study of parent-child relationships in adolescents

Dr. Divya Hiran*, Neelam Sharma**

***Co-Professor, Department of Home Science, Government Meera Girls College, Udaipur.**
****Researcher, Department of Home Science, Mohanlal Sukhadia University, Udaipur.**

किशोरों में अभिभावक–बाल संबंधो का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. दिव्या हिरन*, नीलम शर्मा **

* सह–आचार्य, गृह–विज्ञान विभाग, राजकीय मीरा कन्या महाविद्यालय, उदयपुर.
** शोधार्थी, गृह–विज्ञान विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर.

सार

माता–पिता और बच्चे का रिश्ता दुनिया के सबसे संवेदनशील और भावनात्मक संबंधों में से एक है। लेकिन बदलती प्रवृत्ति और पीढ़ी के अंतर के साथ पालन–पोषण शैलियों और बदले में बच्चों के व्यवहार के मामले में बहुत कुछ बदल गया है। यह किशोरावस्था के दौरान अधिक आम पाया जाता है। माता–पिता और बच्चों के बीच संबंध एक बहुमूल्य बंधन है जिसके लिए बहुत देखभाल और दोनों के बीच उचित समझ की आवश्यकता होती है। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य पूर्व किशोरावस्था एवं उत्तर किशोरावस्था के बालकों के अपने माता–पिता के साथ संबंधों का तुलनात्मक अध्ययन करना है। वर्तमान अध्ययन का भौगोलिक क्षेत्र राजस्थान के उदयपुर जिले का शहरी क्षेत्र था। वर्तमान अध्ययन में उद्देश्यपूर्ण यादृच्छिक प्रतिदर्शन विधि द्वारा 320 प्रतिदर्शो (160 पूर्व किशोरावस्था और 160 उत्तर किशोरावस्था) का चयन किया गया। डाटा संग्रह के लिए डॉ. नलिनी राव (1989) द्वारा विकसित अभिभावक–बाल संबंध मापनी (PCRS) का उपयोग किया गया। शोध परिणामो से ज्ञात होता है कि पूर्व किशोरावस्था एवं उत्तर किशोरावस्था के उत्तरदाताओं द्वारा अनुभव किये गए माता पिता के साथ संबंधो के स्तर में कोई अंतर नहीं है।

प्रस्तावना

किशोरावस्था एक व्यक्ति के लिए एक महत्वपूर्ण अवधि है। इस विवेकपूर्ण अवधि में विभिन्न प्रकार के जोखिम लेने वाले व्यवहार शामिल हैं। इसके अलावा, प्रारंभिक किशोरावस्था के लिए एक संभावित जोखिम भरा व्यवहार को उत्तर किशोरावस्था के लिए विकासात्मक रूप से हानिकारक नहीं माना जा सकता है। दूसरे शब्दों में, इस अवधि में विभिन्न विकासात्मक विशेषताएँ भी हैं। जोखिम लेने वाले व्यवहार कुछ हद तक विनियामक और सामाजिक रूप से स्वीकार्य हो सकते हैं, जो जोखिम भरे व्यवहार के प्रकार, आवृत्ति और डिग्री पर निर्भर करता है। इसके अलावा, अनुभवजन्य डेटा इंगित करता है कि युवाओं में खतरनाक व्यवहार में शामिल होने की अधिक संभावना होती है जो मृत्यु और दीर्घकालिक परिणामों का उच्च जोखिम रखता है। किशोरो के जोखिम लेने वाले व्यवहार पर पिछले अध्ययनों के परिणामों ने सुझाव दिया है कि जोखिम लेने वाले व्यवहार को समझने में किशोरों के व्यक्तित्व और जनसांख्यिकीय विशेषताओं की भूमिका पर भी विचार किया जाना चाहिए। (जैन और पसरीजा, 2014)[1]।

एक व्यक्ति के पूरे जीवनकाल में कई संबंधों के शामिल होने के बावजूद माता–पिता और बच्चे का संबंध प्रमुख रूप से महत्वपूर्ण है। माता–पिता और बच्चों के बीच का संबंध बच्चे के विकास में बहुत अधिक उत्तरदायी होता है। पेरेंटिंग बच्चे के भावनात्मक और शारीरिक

पालन–पोषण में पूरी तरह से शामिल होने की एक प्रक्रिया है। बच्चे की पहली सीख यह है कि माता–पिता आसपास क्या कर रहे हैं, बच्चा एक उत्सुक प्रेक्षक है और जब माता–पिता अनजाने में गलत कार्य करते हैं या बच्चे के सामने गलत शब्दों को जोर से बोलते हैं, तो बच्चा तुरंत इसे पकड़ लेता है और उस समय के दौरान या बाद के चरण में इसे दोहराना सुनिश्चित करता है। माता–पिता अनजाने में अपने बच्चे को बहुत सी बातें सिखाते हैं और बाद में उसी के लिए शिकायत करते हैं। वर्तमान अनुसंधान इस बात की एक अंतर्दृष्टि है कि माता–पिता और बच्चों के बीच संबंध अभी कैसे हैं और कौन से कारक संबंधों को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर रहे हैं।

एक व्यक्ति के सामाजिक जीवन में, किशोरावस्था एक प्रमुख संक्रमणकालीन अवधि है। उदाहरण के लिए, एक किशोर की सामाजिक दुनिया पहले की तुलना में अधिक सहकर्मी केंद्रित होने के लिए बदल जाती है। हालांकि, माता–पिता किशोरावस्था के दैनिक जीवन से गायब नहीं होते हैं। माता–पिता और बच्चों के बीच संबंध की गुणवत्ता को माता–पिता और उनके बच्चों के बीच चल रही परस्पर क्रिया के उत्पाद के रूप में वर्णित किया गया है जो पालन–पोषण के सभी पहलुओं को रेखांकित करता है (हेस एवं अन्य, 2004)[2]। माता–पिता और बच्चे के बीच एक स्वस्थ संबंध महत्वपूर्ण माना जाता है क्योंकि यह माता–पिता और बच्चे के बीच खुले संचार को बढ़ावा देता है, माता–पिता की बेहतर निगरानी और शराब के उपयोग और अन्य व्यवहार से संबंधित उचित सीमाओं की स्थापना के लिए एक नींव प्रदान करता है (डिशियन एंड मैकमोहन 1998)[3]। जाहिर है कि माता–पिता के संबंधों पर शोध के साथ एक बड़ी समस्या यह है कि अवधारणाओं को परिभाषित करना और मापना मुश्किल है। इस प्रकार, इन संबंधों में केंद्रीय आयामों को निर्धारित करने के प्रयासों में उपयोग की जाने वाली शब्दावली भी भिन्न है। प्रभुत्व, स्वायत्तता, उत्तेजना और मनोवैज्ञानिक नियंत्रण जैसी अवधारणाओं के साथ–साथ गर्मजोशी/अस्वीकार, आक्रामक/सहिष्णु जैसी अवधारणाओं के महत्वपूर्ण जोड़े का उपयोग किया गया है (रो एंड सीगलमैन, 1963;[4] रॉस, कैंपबेल और क्लेज़र, 1982[5])। एक सुरक्षित आधार की अवधारणा विकास के सभी चरणों में मौजूद प्रतीत होती है (आर्म्सडेन एंड ग्रीनबर्ग, 1987[6])।

माता–पिता और बच्चे का रिश्ता दुनिया के सबसे संवेदनशील और भावनात्मक संबंधों में से एक है। बच्चे अपने माता–पिता से प्यार करते हैं और माता–पिता के साथ भी ऐसा ही होता है। लेकिन बदलती प्रवृत्ति और पीढ़ी के अंतर के साथ पालन–पोषण शैलियों और बदले में बच्चों के व्यवहार के मामले में बहुत कुछ बदल गया है। यह किशोरावस्था के दौरान अधिक आम पाया जाता है। माता–पिता और बच्चों के बीच संबंध एक बहुमूल्य बंधन है जिसके लिए बहुत देखभाल और दोनों के बीच उचित समझ की आवश्यकता होती है। माता–पिता से एक कोमल विचार और प्रभावी संवाद बच्चे व माता–पिता के बीच प्रभावी संबंध को सुरक्षित करने में सहायक हो सकता है।

जसोरिया, गुप्ता और सिंघवी (2014)[7] ने जांच की कि क्या माता–पिता–बच्चे का संबंध स्कूल जाने वाले बच्चों में भावनात्मक परिपक्वता की भविष्यवाणी करता है। नमूना आकार 16 और 17 वर्ष की आयु के 30 छात्र थे जो राजस्थान के अलवर जिले के एक स्कूल में पढ़ते थे। निष्कर्षों के परिणामस्वरूप, यह पाया गया कि माता–पिता और बच्चों के बीच संबंधों की उपेक्षा करने से स्कूल जाने वाले छात्रों की भावनात्मक परिपक्वता पर हानिकारक प्रभाव पड़ता है। नारस्टे और अन्य (2007)[8] के अनुसार माता–पिता व बच्चे के परस्पर विरोधी संबंधों और किशोरों के बीच कुसमायोजन के बीच संबंध आनुवांशिक प्रभावों से प्रभावित होते हैं। माता–पिता की आलोचना और अपराध के बीच संबंध में आनुवांशिक योगदान का लगभग आधा हिस्सा प्रारंभिक किशोरावस्था की आक्रामकता से भी संबंधित हैं। बच्चों में आक्रामकता, नकारात्मक पालन–पोषण को जन्म देती है, जो किशोरों के सामाजिक व्यवहार को प्रभावित करती हैं।

सोएनन्स, और अन्य (2019)[9] के अनुसार, किशोरावस्था एक प्रतिष्ठा के साथ विकास की अवधि है। बचपन की तरह, इसे अक्सर माता–पिता के साथ तीव्र संघर्ष, भावनात्मक उथल–पुथल और तर्कहीन व्यवहार की अवधि के रूप में वर्णित किया जाता है। यद्यपि किशोरों की कार्यप्रणाली और माता–पिता–किशोर संबंधों के बारे में कई रूढ़िवादी धारणाएं अनुचित हैं, किशोरावस्था जीवन में एक प्रमुख विकासात्मक अवधि का प्रतिनिधित्व करती है जिसकी विशेषता कार्यप्रणाली के

विभिन्न क्षेत्रों में बहुआयामी और बहुदिशात्मक परिवर्तन है। यह देखते हुए कि किशोरावस्था के बारे में रूढ़िवादिता बनी हुई है और माता–पिता–किशोरों के बीच बातचीत की गुणवत्ता को प्रभावित करती है। किशोर माता–पिता के व्यवहार के अर्थ और माता–पिता के अनुरोधों का जवाब देने के तरीकों में भिन्न होते हैं। इसके अलावा, किशोर माता–पिता के अधिकार की वैधता के बारे में तेजी से अलग–अलग तरीकों से प्रतिबिंबित करते हैं।

उद्देश्य

- अभिभावक बालक–संबंधों पर आयु–वर्ग (पूर्व किशोरावस्था 13–15 वर्ष तथा उत्तर किशोरावस्था 15–18 वर्ष) के प्रभाव का अध्ययन करना।

अनुसंधान पद्धति

प्रतिदर्शः एक प्रतिदर्श जनसंख्या का एक प्रतिनिधि भाग होता है । वर्तमान अध्ययन में आयु–वर्ग (पूर्व किशोरावस्था और उत्तर किशोरावस्था) के आधार पर चयनित 320 किशोर शामिल थे। इस अध्ययन में प्रतिदर्श विधि के रूप में उद्देश्यपूर्ण यादृच्छिक प्रतिदर्शन का उपयोग किया गया था।

आंकडा संग्रह के उपकरण और तकनीकः वर्तमान शोध में प्रतिदर्श पर नलिनी राव द्वारा विकसित अभिभावक–बाल संबंध मापनी का उपयोग किया गया।

मापनी के कथनों से एकत्र की गई जानकारी को पारिवारिक बातचीत के साथ बच्चों के अनुभवों के आयामों में वर्गीकृत किया जा सकता है जो आम तौर पर दोनों (माता–पिता) पर लागू होते हैं। उपकरण में 100 कथन शामिल हैं जिन्हें दस आयामों में वर्गीकृत किया गया है, अर्थात् रक्षा, प्रतीकात्मक दंड, अस्वीकार, वस्तुनिष्ठ दंड, मांग, उदासीन, प्रतीकात्मक पुरस्कार, प्रेमपूर्ण, वस्तुनिष्ठ पुरस्कार और उपेक्षा। मापनी के कथनों को आयामों के समान क्रम में व्यवस्थित किया गया है।

प्रत्येक उत्तरदाता अपने माता और पिता के लिए स्वतंत्र रूप से उपकरण का मूल्यांकन करता है। मापनी में तीन कथन को छोड़कर (बच्चों के साथ पिता और मातृ संबंधों में भिन्नता की प्रकृति के कारण), माता–पिता दोनों के लिए कथन समान हैं।

उत्तरदाता अपने पिता और माता के साथ अपने संबंधों के बारे में अपनी धारणा के अनुसार कथनों को पांच बिंदु मापनी पर 'हर बार' से लेकर 'बहुत कम' 5, 4, 3, 2, और 1 पैमाने के आधार पर मूल्यांकन करते हैं। प्रत्येक माता–पिता के लिए पैमाने को अलग–अलग स्कोर किया जाता है, इस प्रकार प्रत्येक उत्तरदाता मापनी के दस आयामों पर 'पिता' और 'माता' के लिए दस अंक प्राप्त करता है। प्रत्येक उप– मापनी से मापनी के प्रत्येक कथन पर रेटिंग के अंकों को जोड़कर एक अंक प्राप्त होता है। सामाजिक, मनोवैज्ञानिक और स्कूली कारकों से जुड़ी समस्या के विश्लेषण में पैमाने को उत्पाद और पूर्वनिर्धारित परिवर्तनशील दोनों के रूप में बहुत उपयोगी और प्रभावी पाया गया है।

प्रक्रियाः मुख्य अध्ययन के अंतर्गत उदयपुर शहर के यादृच्छिक रूप से चयनित सरकारी और गैर–सरकारी विद्यालयों में एक व्यापक डेटा संग्रह कार्य प्रारंभ किया गया। परीक्षण व्यक्तिगत और समूह दोनों स्थितियों में प्रशासित किया गया था। उत्तरदाताओं को आश्वासन दिया गया कि उनकी प्रतिक्रियाएं पूरी तरह से शोध उद्देश्यों के लिए दर्ज की जा रही हैं और उन्हें गोपनीय रखा जाएगा। बातचीत के लिए उपयोग की जाने वाली भाषा हिंदी और अंग्रेजी दोनों का मिश्रण थी और मापनी एक ही सत्र में प्रशासित की गई। डेटा संग्रह के बाद, अंतिम चरण डेटा का विश्लेषण करना और शोध के निष्कर्षों को प्रस्तुत करना था। रिपोर्टिंग के लिए, डेटा का सारणीकरण और चित्रमय प्रस्तुति की गई।

परिणाम एवं विवेचना

तालिका संख्या 1
अभिभावक बाल–संबंधों के लिए वर्णात्मक सांख्यिकी

(आयु–वर्ग के आधार पर)

अभिभावक	आयु–वर्ग	N	Mean	S.D.	t-value
माता	पूर्व किशोरावस्था	160	314.19	49.56	.019
	उत्तर किशोरावस्था	160	314.29	44.50	
पिता	पूर्व किशोरावस्था	160	303.57	48.99	.933
	उत्तर किशोरावस्था	160	298.76	42.97	

*Significant at 0.01 level of significance. **Significant at 0.05 level of significance.

तालिका संख्या 1, अभिभावक और बाल संबंधो पर पूर्व एवं उत्तर किशोरावस्था के उत्तरदाताओं के माध्य, मानक विचलन और टी–मूल्य का प्रतिनिधित्व करता है। माता के साथ संबंधों पर पूर्व किशोरावस्था के उत्तरदाताओं का औसत स्कोर 314.19 था, और मानक विचलन 49.56 था। उत्तर किशोरावस्था के उत्तरदाताओं का औसत स्कोर 314.29 था, और मानक विचलन 44.50 था। पिता के साथ संबंधों पर पूर्व किशोरावस्था के उत्तरदाताओं का औसत स्कोर 303.57 था, और मानक विचलन 48.99 था। उत्तर किशोरावस्था के उत्तरदाताओं का औसत स्कोर 298. 76 था, और मानक विचलन 42.97 था। परीक्षण नियमावली के अनुसार, माता के साथ दोनों आयु वर्ग के उत्तरदाताओं का सम्बन्ध अत्यधिक सौहार्दपूर्ण पाया गया। पिता के साथ पूर्व किशोरावस्था के उत्तरदाताओं का सम्बन्ध अत्यधिक सौहार्दपूर्ण तथा उत्तर किशोरावस्था के उत्तरदाताओं का स्तर औसत से ऊपर पाया गया। दोनों आयु वर्ग के उत्तरदाताओं के अंको का टी–मूल्य क्रमशः .019 और .933 है, जो असार्थक है। इससे पता चलता है कि पूर्व किशोरावस्था और उत्तर किशोरावस्था के उत्तरदाताओं द्वारा अनुभव किए गए अभिभावक–बाल संबंधों के स्तर में कोई अंतर नहीं है।

वर्तमान अध्ययन का एक अन्य उद्देश्य अभिभावक–बाल संबंधों के विभिन्न आयामों के संबंध पर आयु वर्ग (पूर्व किशोरावस्था एवं उत्तर किशोरावस्था) के प्रभाव का अध्ययन करना था। परिणामो से ज्ञात होता है कि अभिभावक–बाल संबंधों पर आयु वर्ग (पूर्व किशोरावस्था एवं उत्तर किशोरावस्था) का प्रभाव नहीं पड़ता है। अतः कहा जा सकता है कि उम्र माता–पिता एवं बच्चो के संबंधों को प्रभावित नहीं करती है। माता पिता के साथ जो सौहार्दपूर्ण सम्बन्ध प्राम्भिक किशोरावस्था के बच्चे अनुभव करते है वही सम्बन्ध उत्तर किशोरावस्था के बच्चे भी अनुभव करते है। वर्तमान शोध परिणामो के आधार पर कहा जा सकता है कि अभिभावक बाल संबंधों के लगभग सभी आयामों पर दोनों आयु वर्ग के औसत अंको में समानता है। केवल मांग आयाम पर माता के साथ पूर्व किशोरावस्था की तुलना में उत्तर किशोरावस्था के बच्चो के साथ अधिक नकारात्मक पाया गया अतः यह कहा जा सकता है कि माता इनसे अधिक मांग करती है अथवा उत्तर किशोरावस्था के बालकों से माता की अपेक्षाएं अधिक है। इसी प्रकार पुरुस्कार (प्रतीकात्मक एवं वस्तुनिष्ठ) आयामों पर पिता के साथ उत्तर किशोरावस्था की तुलना में पूर्व किशोरावस्था के बच्चों के सम्बन्ध अधिक अनुकूल पाए गए।

निष्कर्ष

अभिभावक–बाल संबंधों पर आयु वर्ग (पूर्व किशोरावस्था एवं उत्तर किशोरावस्था) का प्रभाव नहीं पड़ता है।

REFERENCES

1. Jain, M. & Pasrija, J. (2014). Risk Taking Behaviour Among Adolescents in Relation to Some Demographical Variables. *Bhartiyam International Journal of Education & Research, Vol- 4*, 2277-1255.
2. Hesse, E., & Main, M. (2004). Disorganized infant, child, and adult attachment: Collapse in behavioral and attentional strategies. *Journal of the American Psychoanalytic Association, 48(4),* 1097-1127.

3. Dishion, T. J., & McMahon, R. J. (1998). Parental monitoring and the prevention of child and adolescent problem behavior: A conceptual and empirical formulation. *Clinical Child and Family Psychology Review, 1(1),* 61-75.
4. Roe, A., & Siegelmann, M. A. (1963). A parent-child questionnaire. *Child Development, 36,* 355-369.
5. Ross, M. W., Campell, R. L., & Clayer, J. R. (1982). New inventory for measurement of parental rearing patterns. *Acta Psychiatrica Scandinasvica, 66,* 499-507.
6. Armsden, G.C., & Greenberg, M.T. (1987). The inventory of parent and peer attachment: Relationships to well-being in adolescence. *Journal of Youth and Adolescence, 16(5),* 427-454.
7. Jasoria, A., Gupta, R. K., & Singhvi, M. (2014). Parent-Child Relationship Predict Emotional Maturity among School Going Students. *Indian Journal of Health and Wellbeing, 5(11),* 1362-1364.
8. Narusyte, J., Andershed, A.K., Neiderhiser, J.M., & Lichtensteim, P. (2007). Aggression as as mediator of genetic contributions to the association between negative parent-child relationships and adolescent anti-social behaviour. *European Child and Adolescent Psychiartry, 16 (1),* 128-137.
9. Soenens, B., Vansteenkiste, M., & Beyers, W. (2019). Parenting adolescents. In M. H. Bornstein (Ed.), *Handbook of parenting: Children and parenting* (3rd ed., pp. 111–167). Routledge/Taylor & Francis Group.